

शेख फ़रीद - सबद ८
फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े समलि बुकु भरी ॥
सलोक, शेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े समलि बुकु भरी ॥
जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणु करी ॥४॥

सार: जीवन एक रोमांचक आभास है: यह क्षणभंगुर प्रतीत हो सकता है फिर भी यह ऐसे क्षणों से भरा होता है जो हमारे अस्तित्व को उद्देश्यपूर्ण रूप से आकार देते हैं। कृतज्ञता को पोषित करके, सकारात्मक भावनाओं को अपनाकर और स्थायी यादें बनाकर, हम प्रत्येक क्षण को अर्थ से भर सकते हैं और जीवन को पूरी तरह से जी सकते हैं।

फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े समलि बुकु भरी ॥
फरीद कहते हैं कि अगर मुझे पता होता कि मेरे हाथ में सीमित तिल हैं तो मैं उन्हें और अधिक संजोता; यह जीवन की क्षणभंगुरता की प्रकृति को पहचानने और इस वास्तविकता के प्रति जागृत होने का सार है कि समय सीमित है।

जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणु करी ॥४॥
अगर मुझे पता होता कि मेरा गुरु युवा और मासूम है तो मैं कम अभिमानी होता। यह कथन दर्शाता है कि ज्ञान प्राप्त करने के शुरुआत में व्यक्ति अपनी समझ को अधिक आंकता है जिससे श्रेष्ठता की झूठी भावना को बढ़ावा मिलता है। (४)

तत्त्व: शेख फ़रीद बाल्यकाल की उस मासूमियत का जश्न मनाते हैं जो अक्सर धीरे-धीरे खो जाती है जब हमारे सीमित और पूर्वाग्रहों से भरे विश्वास एक अहंकारी अस्तित्व की भावना को जन्म देते हैं। उनका मानना है कि एक छोटे बच्चे की अप्रदूषित बेदाग जागरूकता वह ज्ञान और विनम्रता धारण कर सकती है जो एक वृद्ध व्यक्ति से भी अधिक हो सकती है। सभी उम्र के लोगों का सम्मान

करना चाहिए ताकि विनम्रता को पोषित किया जा सके और बिना पूर्वाग्रह के सीखने और अभिव्यक्त करने के लिए बालपन की मासूम ऊर्जा को सुरक्षित रखा जा सके।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com